मूल्य 1 रु.

वर्षः 9 - अंक : 218, मुंबई, मंगलवार, 12 नवंबर, 2019 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त ®

अब हर सच होगा उजागर

नवंबर के पहले हफ्ते में देशभर में 42 जगहों पर आईटी के छापे

3300 करोड़ के हवाला रैकिट का पर्दाफाश

संवाददाता

नई दिल्ली। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर के कुछ बड़े कॉर्पोरेट्स और हवाला ऑपरेटरों के बीच साठगांठ का पर्दाफाश किया है। नवंबर महीने के पहले हफ्ते में इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने फर्जी बिल जारी करने वालों और हवाला के जरिए लेनदेन करने वालों के खिलाफ बड़ा अभियान चलाया। छापों से आईटी डिपार्टमेंट ने 3300 करोड़ रुपये के हवाला रैकिट का पदार्फाश किया। इस दौरान दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, ईरोड, पुणे, आगरा और गोवा में कुल 42 ठिकानों पर छापेमारी हुई।

राज्यपाल ने दिया...

शिवसेना को झटका

सरकार गठन के लिए और समय देने से इनकार

संवाददाता/मुंबई। महाराष्ट्र में सरकार बनाने की कोशिश में लगी शिवसेना को बड़ा झटका लगा है। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने शिवसेना को और समय देने से इनकार कर दिया है। मुलाकात करने के बाद शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे ने कहा कि राज्यपाल ने और समय देने से मना कर दिया है। (शेष पृष्ठ 5 पर)

आदित्य ठाकरे बोले- हमारा दावा अभी खारिज नहीं हुआ

राज्यपाल के पाले में गेंद

बहरहाल, गेंद राज्यपाल के पाले में हैं, वह आज रात को महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लगा सकते हैं। वैसे राज्यपाल ने शिवसेना के दावे को खारिज भी नहीं किया है और शिवसेना जब समर्थन पत्र लेकर दावे पेश करने जाती है तो राज्यपाल उसे मौका दे सकते हैं।

सांसद संजय राउत की तबीयत अचानक बिगड़ी

लीलावती हॉस्पिटल में भर्ती हुए

शिवसेना नेता राज्यसभा सांसद संजय राउत की तबीयत अचानक खराब हो गई। सीने में दर्द की शिकायत के बाद उन्हें मुंबई के लीलावती हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। कुछ देर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख शरद पवार के साथ मुंबई के ताज लैंड होटल में नजर आए थे। जानकारी के मुताबिक संजय, उद्धव ठाकरे और शरद पवार के साथ हुई बैठक में उनके साथ मौजूद थे। हालांकि, संजय राउत के भाई सुनील राउत ने एक मराठी चैनल से बात करते हुए बताया कि उनकी हालत स्थिर है और ज्यादा चिंता की बात नहीं है।

सरकार गठन के लिए भाजपा-शिवसेना के बाद अब राकांपा को न्योता

राज्यपाल ने आज 8:30 बजे तक का वक्त दिया

मुंबई। चुनाव नतीजों के 18 दिनों बाद भी महाराष्ट्र में सत्ता की तस्वीर साफ नहीं हो पाई है। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने भाजपा, शिवसेना के बाद तीसरे सबसे बड़े दल राकांपा को सरकार बनाने का न्योता दिया। (शेष पृष्ठ 5 पर)

दैनिक
मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

समाचार

मुंबई, मंगलवार
12 नवंबर, 2019

05

कांग्रेस नेता संजय निरुपम का अपनी ही पार्टी से सवाल- क्या आगे शिवसेना से मिलकर लड़ेंगे चुनाव?

संजय निरुपम ने की जल्द चुनाव की भविष्यवाणी

मुंबई। महाराष्ट्र में सरकार बनाने को लेकर शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) और कांग्रेस में बात बनती दिख रही है। हालांकि, एनसीपी और कांग्रेस ने अपने पत्ते अभी नहीं खोले हैं, लेकिन शिवसेना ने दोनों पार्टियों से गठबंधन करने के लिए कदम बढ़ा दिया है। इस बीच कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने संभावित गठबंधन पर सवाल उठाए हैं और भविष्यवाणी की है कि महाराष्ट्र में जल्दी चुनाव हो सकते हैं। सरकार गठन की माथापच्ची पर कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने कहा, कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सरकार बनाता है और कैसे? लेकिन महाराष्ट्र में राजनीतिक अस्थिरता से अब इनकार नहीं किया जा सकता है। जल्दी चुनाव के लिए तैयार हो जाओ। यह 2020 में हो सकते हैं। क्या हम शिवसेना के साथ गठबंधन करके चुनाव में जा सकते हैं? संजय निरुपम ने

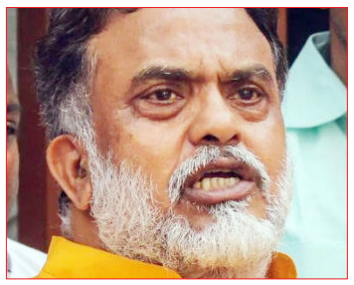

इससे पहले रविवार को भी शिवसेना के साथ गठबंधन की संभावना पर सवाल उठाए थे। संजय राउत ने कहा था कि कांग्रेस-एनसीपी को शिवसेना का समर्थन लेना पड़ सकता है, जो कि एक विनाशकारी कदम होगा और ये कभी नहीं होना चाहिए। चुनाव के दौरान अपनी ही पार्टी कांग्रेस को लेकर बगावती रुख दिखाने वाले संजय निरुपम ने कहा था कि अगर बीजेपी राज्यपाल के न्योते के बाद भी सरकार बनाने में सफल नहीं रहती है, तो राज्यपाल को दूसरे बड़े गठबंधन एनसीपी-कांग्रेस को न्योता देना होगा। लेकिन उन्हें इसे नकारना पड़ेगा, क्योंकि उनके पास बहुमत का आंकड़ा नहीं है। हालांकि, अब महाराष्ट्र के सियासी समीकरण पूरी तरह बदलते नजर आ रहे हैं। एनसीपी ने शिवसेना को समर्थन पर शर्त रखी थी, जिसे शिवसेना ने मान लिया है और कांग्रेस पर सबकी नजर है।

बीकेसी-चूनाभट्टी फ्लाइओवर हुआ शुरू

कई डेडलाइन मिस करने के बाद आखिरकार बीकेसी-चूनाभट्टी फ्लाइओवर रविवार शाम हो खोल दिया गया

संवाददाता

मुंबई। कई डेडलाइन मिस करने के बाद आखिरकार बीकेसी-चूनाभट्टी फ्लाइओवर रविवार शाम हो खोल दिया गया। नई सरकार का गठन नहीं होने की वजह से बगैर किसी कार्यक्रम के आम जनता को फ्लाइओवर के इस्तेमाल की अनुमति दे दी गई। राज्य के कार्यवाहक मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रविवार को ट्विटर के माध्यम से बहुप्रतीक्षित फ्लाइओवर शुरू करने की जानकारी दी। फडणवीस के अनुसार, 1.6 किलोमीटर लंबे और 17 मीटर चौड़े फ्लाइओवर की वजह धारावी और सायन जंक्शन की ट्रैफिक की समस्या खत्म हो जाएगी। ईस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे से बीकेसी जाने वालों का 30 मिनट का समय बचेगा। बीकेसी-चूनाभट्टी फ्लाइओवर की वजह से नासिक-ठाणे और पनवेल-पुणे मार्ग की यात्रा भी आरामदायक हो जाएगी। यह फ्लाइओवर बीकेसी, बाबूभाई कंपाउंड, सायन स्टेशन, डंकन कॉलोनी, चूनाभट्टी स्टेशन और सोमैया मैदान से हो कर गुजरेगा।

15 मिनट में बीकेसी से चूनाभट्टी

203 करोड़ रुपये की लागत से तैयार 1.6 किलोमीटर लंबे इस फ्लाइओवर से केवल 15 मिनट में बीकेसी से चूनाभट्टी पहुंचना संभव होगा। इससे पहले यह सफर पूरा करने में 40 से 50 मिनट का समय लगता था। फ्लाइओवर चूनाभट्टी स्थित सोमैया मैदान से शुरू होगा। यह चूनाभट्टी व सायन, एलबीएस रोड व मीठी नदी से होते हुए बीकेसी डायमंड मार्केट के पीछे उतरेगा। यह फ्लाइओवर बीकेसी में जिस जगह पर उतरेगा, वह हिस्सा बीकेसी का सेंटर पॉइंट है। फ्लाइओवर के कारण कुर्ला और सायन, सायन-धारावी लिंक रोड और सांताक्रुज-चेंबूर लिंक रोड के बीच पड़ने वाले ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे और एलबीएस मार्ग पर होने वाले ट्रैफिक से निजात मिल जाएगी।

(पृष्ठ 1 का शेष)

राज्यपाल ने दिया शिवसेना को झटका

मुलाकात के दौरान आदित्य ठाकरे ने राज्यपाल को बताया कि बाकी पार्टियों से बात चल रही है। राज्यपाल ने शिवसेना को 24 घंटे का और वक्त देने से मना कर दिया है। आदित्य ने कहा कि हमारा दावा खारिज नहीं हुआ है। हमने राज्यपाल को बताया कि हम सरकार बनाना चाहते हैं। आदित्य ठाकरे ने कहा कि हमारा दावा अभी खारिज नहीं हुआ है और हम भी सरकार बनाना चाहते हैं। अन्य दलों से हमारी बातचीत जारी है और उनका समर्थन पत्र हासिल करने में वक्त लग रहा है। राज्यपाल से मुलाकात के बाद शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे ने कहा, हमने राज्यपाल से कहा कि शिवसेना सरकार बनाने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि हमने राज्यपाल से 2 दिन का वक्त मांगा था, लेकिन वो देने से इनकार कर दिया है। ठाकरे ने कहा कि बाकी पार्टियों से शिवसेना की बातचीत चल रही है, लेकिन उनका पत्र हासिल करने में वक्त लग रहा है, ऐसे में हमें समय दिया जाए, हालांकि राज्यपाल ने शिवसेना को समय देने से वक्त देने से मना कर दिया है।

सरकार गठन के लिए भाजपा-शिवसेना...

राज्यपाल से सोमवार रात मुलाकात के बाद राकांपा नेताओं ने यह जानकारी दी। भाजपा के इनकार के बाद शिवसेना को न्योता दिया गया था। उद्धव की पार्टी ने तय समय सीमा सोमवार 7:30 बजे से पहले सरकार बनाने की इच्छा जाहिर की।लेकिन, राजभवन के बाहर आकर शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे ने कहा कि हमने सरकार बनाने के लिए 2 दिन का वक्त मांगा था, लेकिन वह हमें नहीं मिला। उन्होंने यह कहकर सस्पेंस बढ़ा दिया था कि मुझे नहीं मालूम कि आगे क्या होगा। महाराष्ट्र में सरकार बनेगी या राष्ट्रपति शासन लगेगा। आदित्य ने यह भी कहा था कि हमारा दावा अभी खत्म नहीं हुआ है।

1) शिवसेना-राकांपा विधायकों की बैठक

शिवसेना और राकांपा ने सोमवार अपने विधायकों की बैठक बुलाई। शिवसेना विधायक जहां राकांपा और कांग्रेस के सहयोग से सरकार गठन के पक्ष में दिखे। वहीं, राकांपा विधायकों ने भी शिवसेना के विधायकों के समर्थन से सरकार बनाने पर हामी भरी। हालांकि, राकांपा ने साफ कर दिया कि कांग्रेस की बैठक में जो भी फैसला होगा, उसी के आधार पर हम आगे बढ़ेंगे।

2) अरविंद सावंत का इस्तीफा, कांग्रेस-राकांपा की शर्त पूरी

शिवसेना को समर्थन देने के लिए रविवार को राकांपा और कांग्रेस ने शर्त रखी थी कि वह एनडीए से बाहर आए। इसी क्रम में मोदी कैबिनेट में शिवसेना के इकलौते मंत्री अरविंद सावंत ने इस्तीफा दे दिया और शर्त पूरी कर दी। सावंत ने कहा- दिल्ली में झूठ का माहौल है और ऐसी सरकार में रहने का क्या फायदा।

3) उद्धव-पवार की होटल में मुलाकात

अरविंद सावंत के इस्तीफे के बाद ही शिवसेना अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने सत्ता गठन की कवायद तेज कर दी। उन्होंने राकांपा अध्यक्ष शरद पवार से होटल में मुलाकात की और उनसे सरकार बनाने के लिए समर्थन मांगा।

4) सोनिया की कांग्रेस नेताओं से दो बार बैठक

महाराष्ट्र के सियासी हालात को देखते हुए कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने दो बार कांग्रेस नेताओं के साथ बैठक की। सोनिया गांधी ने सोमवार शाम दिल्ली में सीडब्ल्यूसी की बैठक के दौरान महाराष्ट्र के कांग्रेस विधायकों से फोन पर बात भी की।

5) उद्धव ने सोनिया से फोन पर बात की

कांग्रेस की पहली बैठक के बाद उद्धव ठाकरे ने सोनिया गांधी से फोन पर बातचीत की और उनसे समर्थन मांगा। इसके बाद खबरें आईं कि कांग्रेस ने शिवसेना को समर्थन देने पर हामी भर दी है।

हमने प्रेसनोट में सारी बातें कह दी हैं: कांग्रेस

कांग्रेस नेता माणिकराव ठाकरे ने कहा- अभी तक न हमारा न राकांपा का पत्र राज्यपाल कोश्यारी के पास नहीं गया है। यह तय हो चुका है कि दो नेताओं को पवार साहब के पास चर्चा के लिए भेजा जाएगा। राज्य के नेता वहां मौजूद रहेंगे। इसके बाद अगला कदम तय किया जाएगा। कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- हम पहले ही प्रेसनोट जारी कर चुके हैं। हमने उसमें वो सारी बातें बताई हैं, जिन पर वर्किंग कमेटी में चर्चा हुई। कांग्रेस अध्यक्ष ने शरद पवार से बातचीत की है। आगे की बातचीत मुंबई में की जाएगी।

भाजपा-शिवसेना 30 साल में दूसरी बार अलग

भाजपा-शिवसेना के बीच 1989 में गठबंधन हुआ था। 1990 का महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव दोनों दलों ने साथ लड़ा था। 2014 विधानसभा चुनाव से पहले दोनों दल अलग हो गए थे। दोनों दलों ने चुनाव भी अलग लड़ा। हालांकि, बाद में सरकार में दोनों साथ रहे।

इंडस्ट्री की सेहत खराब

उत्पादन 4.3% गिरा

औद्योगिक उत्पादन में गिरावट का सिलसिला जारी है। सितंबर महीने में औद्योगिक उत्पादन में पिछले साल सितंबर की तुलना में 4.3 प्रतिशत गिरावट आई है। सोमवार को जारी किए गए आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक मैन्यूफैक्ररिंग सेक्टर के खराब प्रदर्शन की वजह से औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आई है। पिछले साल सितंबर में फैक्ट्री आउटपुट में 4.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी। सितंबर महीने में मैन्यूफैक्ररिंग सेक्टर में 3.9 प्रतिशत की गिरावट आई है जबकि पिछले साल सितंबर में इसमें 4.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी। सितंबर में पावर सेक्टर में भी 2.6 प्रतिशत की गिरावट हुई है। पिछले साल समान अवधि में इसमें 8.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई थी। सितंबर में माइनिंग सेक्टर में भी 8.5 प्रतिशत की गिरावट आई है। पिछले साल सितंबर में माइनिंग सेक्टर में 0.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी।

लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ ही हो

देश में बहुत समय से यह चर्चा चल रही है कि लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ हो। पहले आम चुनाव के बाद से लंबे समय तक लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही होते रहे हैं। बाद में सरकारों के कार्यकाल पूरा करने के पहले ही गिर जाने और मध्यावधि चुनाव की नौबत आने के कारण एक संविधान सम्मत स्वस्थ परंपरा बाधित हो गई। इसके स्थान पर लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव अलग-अलग होने की परंपरा ने जड़ें जमा लीं। हालांकि कुछ समय पहले लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने पर बहस हुई थी, लेकिन वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी। इसका कारण यही रहा कि राजनीतिक दलों ने एक साथ चुनाव पर अपेक्षित गंभीरता का परिचय नहीं दिया। इस मुद्दे को दोबारा उठाने का कारण यह कि महाराष्ट्र और हरियाणा में नई सरकारों का समुचित तरीके से गठन होने के पहले ही झारखंड में विधानसभा चुनाव की तिथियां घोषित होने से चुनावों के सिलसिले से छुटकारे की जरूरत एक बार फिर महसूस हो रही है। आखिर महाराष्ट्र और हरियाणा के साथ ही झारखंड विधानसभा के चुनाव कराने की पहल क्यों नहीं हुई? इस सवाल का चाहे जो जवाब हो, इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि झारखंड विधानसभा चुनाव खत्म होते ही दिल्ली विधानसभा के चुनाव करीब आ जाएंगे। दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद बिहार विधानसभा चुनाव निकट आ जाएंगे। इस तरह यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होने वाला। बार-बार होने वाले चुनाव केवल सरकारी खजाने पर बोझ ही नहीं बनते, वे शासन-प्रशासन के आवेग को भी बाधित करते हैं। इसी के साथ वे राजनीतिक दलों की प्राथमिकताओं को भी प्रभावित करते हैं। इसमें दोराय नहीं कि लोकसभा के साथ विधानसभाओं के चुनाव कराने में कुछ समस्याएं हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि उनका समाधान नहीं हो सकता। यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो ऐसा आसानी से किया जा सकता है। एक साथ चुनाव को लेकर एक बड़ी दलील यह है कि ऐसा होने से क्षेत्रीय दलों को घाटा हो सकता है। इस दलील में कुछ वजन तो है, लेकिन इस कथित घाटे से बचने के लिए लोकसभा चुनाव के दो या तीन साल बाद सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जा सकते हैं। इस तरह पांच साल की अवधि में देश को केवल दो बार ही चुनावों का सामना करना होगा-पहले लोकसभा चुनाव का और फिर विधानसभाओं के चुनाव का।

अशोक भाटिया

बनता-टूटता रहा है बीजेपी-शिवसेना गठबंधन

उतार-चढ़ाव भरा इतिहास

शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब ठाकरे ने 1989 में भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन किया। दोनों पार्टियों ने 1989 का लोकसभा चुनाव और 1990 का महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ा और सीटों के लिहाज से अपने ग्राफ में इजाफा किया।

अटल बिहारी वाजपेयी के साथ बाल ठाकरे

संवाददाता

महाराष्ट्र में सीएम पद का संघर्ष भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना के तीन दशक पुराने गठबंधन पर भारी पड़ गया है। हालांकि, दोनों दलों के बीच खींचतान की यह पहली घटना नहीं है। 1989 में आधिकारिक रूप से दोनों पार्टियों के साथ आने के बाद कई ऐसे मौके आए जब बीजेपी और शिवसेना के बीच अनबन नजर आई। शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब ठाकरे ने 1989 में भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन किया। बीजेपी की तरफ से स्वर्गीय प्रमोद महाजन ने इस गठबंधन में अहम भूमिका निभाई। दोनों पार्टियों ने 1989 का लोकसभा चुनाव और 1990 का महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ा और सीटों के लिहाज से अपने ग्राफ में इजाफा किया।

1991 में अलग लड़ा बीएमसी चुनाव: गठबंधन में लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ने के बाद जल्द ही दोनों पार्टियां बीएमसी चुनाव में आमने-सामने आ गईं। सीट बंटवारे को लेकर शिवसेना सहमत नहीं हुई और बीजेपी से उसका गठबंधन टूट गया। इसके बाद छगन भुजबल के शिवसेना छोड़ने पर भी बाला ठाकरे की नाराजगी देखने को मिली।

1995 में मिलकर बनाई सरकार: 1995 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जबकि दूसरे नंबर पर शिवसेना और तीसरे नंबर बीजेपी रही। जिसके बाद बीजेपी और शिवसेना ने मिलकर सरकार बनाई। महाराष्ट्र के बाहर केंद्र की सत्ता में भी शिवसेना बीजेपी के साथ रही। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार में शिवसेना कोटे से 2 कैबिनेट और एक राज्य मंत्री रहे, लेकिन लेबर रिफॉर्म, मंदिर और 370 जैसे मसलों पर शिवसेना बीजेपी सरकार की आलोचना करती रही।

विपक्ष में भी रहे साथ

1999 के बाद से महाराष्ट्र में शिवसेना और बीजेपी विपक्ष में रहे, लेकिन कभी साथ नहीं छोड़ा। केंद्र में भी कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में 2004 से 2014 तक विपक्ष का रोल बीजेपी और शिवसेना ने मिलकर निभाया। हालांकि, 2014 का चुनाव दोनों पार्टियों ने अलग पड़ा। 2012 में शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे का निधन हो गया। इसके बाद 2014 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी से शिवसेना की बात नहीं पाई और दोनों ने अलग-अलग चुनाव लड़ा। चुनाव के बाद शिवसेना बीजेपी सरकार में शामिल हो गई और राज्य सरकार के अलावा केंद्र की मोदी सरकार में भी हिस्सेदारी हासिल की। हालांकि, इस दौरान किसान, नोटबंदी और जीएसटी जैसे मुद्दों पर शिवसेना बीजेपी सरकार की आलोचना करती रही। 2018 में शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने कभी भी बीजेपी से गठबंधन न करने तक की बात कह दी। लेकिन लोकसभा चुनाव से ठीक पहले फरवरी 2019 में दोनों दलों के बीच बराबर सीट वितरण और बराबर सत्ता के वादे के साथ गठबंधन हो गया।

केंद्र में हिस्सेदारी पर शुरू हुई नाराजगी

दोनों पार्टियों ने मिलकर 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा। केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी और शिवसेना के कोटे से सिर्फ एक मंत्री यानी अरविंद सावंत को शामिल किया गया। बीजेपी को लोकसभा में बंपर बहुमत मिलने के चलते शिवसेना चाहकर भी इस हिस्सेदारी को चैलेंज नहीं कर सकी और उसने खामोशी अख्तियार कर ली। लेकिन जब विधानसभा चुनाव का नंबर आया तो टिकट बंटवारे पर शिवसेना ने बीजेपी को अपनी ताकत का अहसास कराया।

अंतिम दौर में हो सका गठबंधन

हाल ही में संपन्न हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में शिवसेना और बीजेपी के बीच सीट वितरण को लेकर फिर एक बार खींचतान दिखाई दी। कई दिनों तक गठबंधन पर सस्पेंस बना रहा और नामांकन शुरू होने से ठीक पहले ही दोनों दलों के बीच डील फाइनल हो सकी। हालांकि, शिवसेना को फिर भी बराबर सीटें नहीं मिल सकीं, लेकिन चुनाव नतीजों ने उसे ताकत दिखाने का मौका दे दिया।

बहुमत से काफी दूर रह गई बीजेपी

24 अक्टूबर को आए महाराष्ट्र विधानसभा के नतीजों में बीजेपी 105, शिवसेना 56, एनसीपी 54 और कांग्रेस 44 सीटें जीत पाईं। इस तरह बीजेपी बहुमत से काफी दूर रह गई और इसी मौके पर शिवसेना ने अपनी शर्तों को सामने रख दिया। शिवसेना 50-50 फॉर्मूले के तहत ढाई-ढाई साल के लिए मुख्यमंत्री पद पर अड़ गई, लेकिन बीजेपी इस मांग पर बिल्कुल राजी नहीं हुई और अंततः इस मुद्दे पर दोनों पार्टियों की राहें एक बार फिर अलग हो गईं।

जेएनयू: फीस बढ़ोतरी के विरोध में छात्रों का प्रदर्शन,

मानव संसाधन मंत्री 6 घंटे कैंपस में फंसे रहे

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में फीस बढ़ोतरी और ड्रेस कोड के विरोध में 15 दिन से छात्र प्रदर्शन कर रहे हैं। सोमवार को छात्रों के प्रदर्शन को देखते हुए सुबह से ही परिसर में पुलिस मौजूद थी। जेएनयू से लगभग तीन किलोमीटर दूर एआईसीटीई का गेट बंद कर दिया गया था, जहां दीक्षांत समारोह हो रहा था। इसमें उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू और मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल मौजूद थे। जेएनयू छात्रों के प्रदर्शन के चलते मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक 6 घंटे तक कैंपस में ही फंसे रहे। हालांकि, छात्रों का प्रदर्शन उग्र होने से पहले उपराष्ट्रपति वहां से चले गए। प्रदर्शन के चलते मंत्री पोखरियाल को अपने पूर्व निर्धारित 2 कार्यक्रम भी निरस्त करने पड़े। आखिरकार मंत्री निशंक शाम 4:15 बजे वहां से निकले। दूसरी तरफ जेएनयू के छात्र फीस बढ़ोतरी को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। इसके मुताबिक, छात्रावास के सिंगल रूम का किराया 10 रु. से बढ़ाकर 300 रु., डबल रूम का किराया 20 रु. से 600 रु. करने, मैस की सुरक्षा निधि को 5,500 से बढ़ाकर 12,000 रु. करने की बात कही गई है। दिल्ली पुलिस के पीआरओ मंदीप एस.रंधावा ने कहा- पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित कर लिया है। हम लगातार जेएनयू अथॉरिटी और छात्रों के साथ संपर्क में हैं। हम सभी से बातचीत कर रहे हैं। जेएनयू परिसर के उत्तर और पश्चिम द्वार के बाहर बैरिकेड्स लगाए गए थे। साथ ही एआईसीटीई सभागार और जेएनयू के बीच बाबा बालकनाथ मार्ग पर, ट्रैफिक सिग्नल के पास, फ्लाईओवर के नीचे और कार्यक्रम स्थल के पास स्थित मार्ग पर बैरीकेडिंग की गई थी। छात्रों ने बैरिकेड तोड़ दिया और सुबह करीब 11.30 बजे कार्यक्रम स्थल की ओर बढ़ने का प्रयास करने लगे। प्रदर्शनकारियों में से कुछ को हिरासत में लिया गया है। छात्र हाथों में तख्तियां लेकर 'दिल्ली पुलिस गो बैक' जैसे नारे लगा रहे थे। कुलपति एम जगदीश कुमार को 'चोर' कह रहे थे। जेएनयूएसयू के छात्रसंघ पोखरियाल से मिले। उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी मांगों पर गौर किया जाएगा। हालांकि, छात्र वीसी से मिलने के लिए नारा लगा रहे थे। घोष ने कहा कि आज हमारे लिए ऐतिहासिक दिन है। हमने बैरिकेड को तोड़ा, दीक्षांत समारोह स्थल पर पहुंचे और मंत्री से मिले। यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि हम एकजुट थे। यह हमारे आंदोलन का अंत नहीं है। हमने एचआरडी मंत्री से वीसी को छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए कहने का आग्रह किया। छात्रों के अनुसार, वे हॉस्टल मैनुअल, पार्थसारथी चट्टानों पर प्रवेश और छात्रसंघ कार्यालय पर ताला लगाने के के विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैनुअल में शुल्क वृद्धि और ड्रेस कोड जैसे प्रतिबंध लगाए गए हैं।

अयोध्या: मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड 17 नवंबर को फैसले की समीक्षा करेगा

सुन्नी वक्फ बोर्ड की बैठक 26 को

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीबी) अयोध्या विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर रिव्यू पिटीशन दाखिल करने पर विचार कर सकता है। एआईएमपीबी ने 17 नवंबर को इसके लिए बैठक बुलाई है। दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश सुन्नी सैंट्रल वक्फ बोर्ड ने फैसले के बाद की कार्रवाई पर चर्चा के लिए 26 नवंबर को बैठक बुलाई है। हालांकि वक्फ बोर्ड ने कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए रिव्यू पिटीशन दाखिल करने से इनकार किया है। अयोध्या विवाद में मुस्लिम पक्ष के वकील जफरयाब जिलानी ने कहा, 17 नवंबर को एआईएमपीबी की बैठक में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर रिव्यू पिटीशन दाखिल करने या न करने पर फैसला होगा। जिलानी से पूछा गया था कि फैसले को लेकर समाज के कुछ हिस्सों में असंतोष है और ऐसे में मुस्लिम पक्ष अदालत के फैसले पर किस तरह प्रतिक्रिया देने जा रहा है। जिलानी ने ट्रायल कोर्ट, इलाहाबाद हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में उत्तर प्रदेश सैंट्रल सुन्नी वक्फ बोर्ड सहित मुस्लिम पार्टियों की पैरवी की थी।

सुन्नी सैंट्रल वक्फ बोर्ड ने कोर्ट के फैसले का स्वागत किया

इससे पहले उत्तर प्रदेश सुन्नी सैंट्रल वक्फ बोर्ड ने कोर्ट के फैसले के बाद आगे की कार्रवाई पर चर्चा करने के लिए 26 नवंबर को बैठक बुलाने की बात कही थी। बोर्ड के चेयरमैन जफर अहमद फारूखी ने रविवार (10 नवंबर) को कहा- 26 नवंबर की बैठक में बोर्ड अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के मुताबिक कदम उठाने पर चर्चा करेगा। बोर्ड अयोध्या में मस्जिद के लिए दिए जाने वाले 5 एकड़ जमीन को स्वीकार करने या न करने पर भी फैसला कर सकता है। 9 नवंबर को फारूखी ने अयोध्या विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया था और कहा था कि सुन्नी सैंट्रल वक्फ बोर्ड कोर्ट के फैसले के खिलाफ रिव्यू पिटीशन दाखिल नहीं करेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने विवादित जमीन हिंदू पक्ष को दी, मस्जिद के लिए जमीन मिलेगी

134 साल पुराने अयोध्या मंदिर-मस्जिद विवाद पर 9 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया था। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अगुआई वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से यह फैसला सुनाया। इसके तहत अयोध्या की 2.77 एकड़ की पूरी विवादित जमीन राम मंदिर निर्माण के लिए दे दी। शीर्ष अदालत ने कहा कि मंदिर निर्माण के लिए 3 महीने में ट्रस्ट बने और इसकी योजना तैयार की जाए। चीफ जस्टिस ने मस्जिद बनाने के लिए मुस्लिम पक्ष को 5 एकड़ वैकल्पिक जमीन दिए जाने का फैसला सुनाया, जो कि विवादित जमीन की करीब दोगुना है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

दीपिका पादुकोण पड़ीं बीमार

जिगरी दोस्त की शादी में तो हर कोई ज्यादा मस्ती और मजे तो करता ही है। इसकी वजह से अक्सर ल-ोग थकान और खाने-पीने का शेड्यूल बिगड़ जाने पर बीमार पड़ जाते हैं। ऐसा ही अब दीपिका पादुकोण के साथ भी हुआ है। दीपिका ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर खुद का एक फोटो शेयर किया है जिसमें वह कमजोर सी दिखाई दे रही हैं। इस तस्वीर पर उन्होंने थमार्मीटर की इमोजी लगाई है जो दिखाता है कि उन्हें फीवर हो गया है। फोटो को शेयर करते हुए ऐक्ट्रेस ने लिखा, जब आप अपनी बेस्ट फ्रेंड की शादी में कुछ ज्यादा ही मजे कर लें। वैसे फैन्स अब बस यही उम्मीद कर रहे हैं कि उनकी यह फेवरिट अदाकारा जल्दी से ठीक हो जाए। वैसे दीपिका के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह मेघना गुलजार की फिल्म 'छपाक' और कबीर खान की मूवी '83' में नजर आएंगी। 'छपाक' में जहां वह ऐसिड अटैक विक्टिम के रोल में होंगी तो वहीं '83' में वह एक बार फिर पति रणवीर सिंह के साथ स्क्रीन शेयर करते हुए ऑन स्क्रीन भी वाइफ का रोल करेंगी।

असल जिंदगी में टिकटॉक से दूर रहती हैं यामी

फिल्म 'बाला' को क्रिटिक्स और फैंस का भरपूर प्यार मिल रहा है। फिल्म के हर किरदार से फैंस खुद को रिलेट कर पा रहे हैं। आपको बता दें, फिल्म में यामी गौतम के किरदार परी ने फैंस को बहुत चौंका दिया है। फिल्म में टिकटॉक सुपरस्टार बनीं यामी की ऐक्टिंग को देखकर ऐसा बिलकुल नहीं लगता है कि उन्हें असल जिंदगी में टिकटॉक चलाना नहीं आता था। आपको शायद यकीन न हो, लेकिन यामी असल जिंदगी में टिकटॉक की दुनिया से कोसों दूर हैं। बकौल यामी, फिल्म में मेरा किरदार टिकटॉक को बहुत पसंद करता है और दिन भर विडियोज बनाता रहता है। असल जिंदगी में मुझे टिकटॉक का ट भी नहीं पता है। मुझे तो टिकटॉप ऑपरेट भी करना नहीं आता था। जब मैंने पहली बार अपना अकाउंट बनाया, तो देखकर हैरान हो गई। टिकटॉक तो एक अलग ही दुनिया है। यह बहुत ही फनी और एंटरटेनिंग है, हालांकि वहां लोग विडियोज को बहुत ही सीरियसली और प्रफेशनल तरीके से बनाते हैं। दस सेकंड के विडियो में उन्हें अपनी क्रिएटिविटी भी दिखानी है। मैंने विडियोज देखकर यही सोचा कि यह तो मैं हूं ही नहीं।

लगता है मैं लव-ट्राइऐंगल में हूं: अनन्या पांडे

अनन्या पांडे फिल्म स्टूडेंट ऑफ द इयर 2 से अपना डेब्यू कर चुकी हैं और जल्द ही पति पत्नी और वो में नजर आएंगी। यह फिल्म लव ट्राइऐंगल है और इसमें कार्तिक आर्यन, भूमि पेडनेकर और अनन्या हैं। अनन्या पांडे ने हाल ही में साइबर बुलीइंग के खिलाफ कैंपेन शुरू किया है और सोशल मीडिया पर उनकी जबर्दस्त फैन फॉलोइंग है। हालांकि इन दिनों शायद वह खुद को प्यार करने की कला सीख रही हैं। हाल ही में एक पोस्ट में उन्होंने लिखा, मुझे लगता है कि मैं लव ट्राइऐंगल में हूं...मैं खुद से प्यार करती हूं, मैं खुदको प्यार करती हूं, मैं अपने आपको प्यार करती हूं। बता दें कि अनन्या ने स्कूल के दिनों में बुलीइंग फेस की थी। एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने बताया था, स्कूल में हम यूनिफॉर्म पहनते थे और नेल पॉलिश और काजल नहीं लगा सकते थे। मुझे कई समस्याएं रहती थीं जैसे बॉडी इशूज, स्ट्रेस, एग्जाम। मैं कुछ भी खा लूं लेकिन बहुत पतली हूं। हर कोई कर्वी बॉडी चाहता है और खास तरह से दिखना चाहता है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं जैसी हूं, खुश हूं। स्कूल में हमेशा असहज रहती थी क्योंकि मेरी यूनिफॉर्म से मेरे पतले हाथ-पैर दिखाई देते थे। लोग मुझे कूबड़ी कहते थे क्योंकि मैं लंबी हूं और लोगों से बात करने के लिए झुक जाती थी। वर्क फ्रंट पर बात करें तो पति पत्नी और वो के बाद अनन्या ईशान खट्टर के ऑपोजिट काली पीली में नजर आएंगी।